




1 John 4:1-6

 (760) 814-1223

1. There are \_\_\_\_\_  
in the \_\_\_\_\_.
2. I cannot \_\_\_\_\_ every \_\_\_\_\_.
3. The \_\_\_\_\_ of truth \_\_\_\_\_  
the \_\_\_\_\_ of Jesus Christ.
4. We should not be \_\_\_\_\_ by, or  
\_\_\_\_\_ of an \_\_\_\_\_  
in the world.
5. The \_\_\_\_\_ in us makes us \_\_\_\_\_  
by His \_\_\_\_\_.

Notes:

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---


---

---

---



1 John 4:1-6

 (760) 814-1223

1. There are \_\_\_\_\_  
in the \_\_\_\_\_.
2. I cannot \_\_\_\_\_ every \_\_\_\_\_.
3. The \_\_\_\_\_ of truth \_\_\_\_\_  
the \_\_\_\_\_ of Jesus Christ.
4. We should not be \_\_\_\_\_ by, or  
\_\_\_\_\_ of an \_\_\_\_\_  
in the world.
5. The \_\_\_\_\_ in us makes us \_\_\_\_\_  
by His \_\_\_\_\_.

Notes:

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---